प्रवाह

दिवस 3 | अंक 1

हिन्दी प्रेस क्लब

BharatX PRESENTS

Oasis '22

DEMESNE OF THE LOST GOLD

50TH EDITION | 19TH TO 23RD NOVEMBER

संपादकीय

अनुक्रमणिका

- रंग और रचना का मेल
- नई पीढ़ी का नया संगीत
- शाम-ए-मलंग
- आज कुछ तूफ़ानी करते हैं!
- किस्सा कुर्सी का
- सिर्फ अपने लिए नही..
- फ़ालतू के मायने
- ताल ठोक के...
- क्रायमैन से बातचीत
- कर्मफल

"हर किसी को मुकम्मल जहाँ नही मिलता, किसी को ज़मीन तो किसी को आसमान नही मिलता"। असली समन्वेषक वही है जो घर का सुखद आँगन छोड़ दूर देश तक पहुँच जाए जहाँ केवल वह धरती और आसमां के बीच अपने जैसे कईयों के साथ अपना खज़ाना खोजे। ऐसी ही एक दुनिया का रूप बिट्स पिलानी, OASIS के दौरान धारण कर लेता है। न इन मुसाफिरों को दिन के समय की चिंता होती है और न ही रात की सर्दी इन्हें एक कमरे में कैद कर सकती है। कुछ लोग इस खज़ाने को अंतरिक्ष में छिपे हज़ारों तारों में ढूंढते हैं तो कुछ इसे Rotunda पर चलचित्र में। कलमकार अपनी rap की तलवार को एक दूसरे से भिड़ाकर अपने कलम की धार का प्रदर्शन करते है और निकलती चिंगारियों की मदद से ख़ज़ाने को ढूंढते हैं। इस जादूई दुनिया में कुछ स्थिर नही रहता है। हर पल कुछ हलचल, हर पल हवा में एक नया उत्साह पाया जाता है। NAB के एक साधारण से दिखने वाले अध्ययनकक्ष में दोपहर को एक कार्यक्रम पाया जाता है तो शाम को उसी स्थान पर एक अलग कार्यक्रम पाया जाता है। कोई कार्यक्रम आयोजित कर तो कोई उसमे प्रतिभागी बन अपना खज़ाना खोजता है। जो Rotunda सुबह मैत्री का वन होता है वही सूरज ढलते जंग का मैदान बन जाता है। नृत्य एवं गायकी के मुकाबले मध्ययुग की याद दिलाते हैं जहाँ प्रतिभागी योद्धा और दर्शक प्रजा की तरह दिखाई देती है। ऐसी स्थापना में सब जायज़ होता है। साम-दाम-दंड-भेद-शोर का यहाँ भरपूर आभास होता है। Audi में कभी बैंड तो कभी अभिनेता अपनी सनक एवं नज़ाकत से दर्शकों को प्रभावित करते हैं तो कभी आँखों में पानी ला देते हैं। कोई Galleria की कलाकृतियों में खज़ाने को खोजता है तो कोई चेहरे को रंगकर खुद एक जीती-जागती कलाकृति बन खज़ाने को एक निराकार रूप दे देते हैं। किसी के लिए यह प्रोफ-शोज़ आनंद के सागर में डूब जाने का एक अवसर होता है तो किसी का पूरा समय इस अवसर को दूसरों के लिए सुनिश्चित करने में निकल जाता है।

खज़ाने की संज्ञा भले ही एक इकलौते वस्तु का सन्देश देती है परंतु इसका तात्पर्य सभी मुसाफिरों के लिए अलग-अलग देखा जाता है। प्रश्न अब यह रहता है कि आप अपने खज़ाने को कब और कैसे ढूंढते हैं क्योंकि यह सपनों का OASIS हर रोज़ अनुभव करने को नही मिलता !

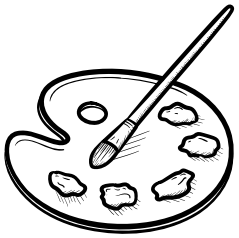

रंग और रचना का मेल

माना कि इंसान चेहरे पर एक कृत्रिम चेहरा लिए घूमता है पर चेहरे पर चेहरा रचना कितना हसीन हो सकता है यह आज पता चला। Creative Activities Club द्वारा आयोजित इवेंट Splash ने रंगों की रचनात्मिकता से चेहरों तथा माहौल को भी रंगीन बना दिया। Rotunda में शाम 4 बजे से लेकर 7 बजे तक आयोजित इस इवेंट को सिर्फ EDM nite की तैयारी का इवेंट कहना गलत होगा। इस इवेंट की एक निराली पहचान थी जिसने सभी प्रतिभागियों के मन में अपनी चाप छोड़ी। इवेंट में प्रतिभागी अपने चेहरे एवं अपने हाथों पर अपनी मनपसंद कलाकृति CrAC सदस्य या अपने दोस्तों द्वारा बनवा सकते थे। पेंट, पेंट ब्रुश और बाकी सारा सामान CrAC द्वारा उपलब्ध कराया गया था। साथ ही प्रतिभागियों की खास मांग पर Neon Paint जैसी अतरिक्त सामग्री भी उपलब्ध कराई गई थी। प्रतिभागियों ने अपनी रचना को पूरी ढील दी और शरीर के विभिन्न अंग जैसे की चेहरा, गला, हाथ, आदि पर अतरंगी सतरंगी कलाकृतियाँ बनवाई। कुछ कलाकृतियों का गहरा सा मतलब था। कुछ कलाकृतियाँ सिर्फ 'cool' दिखने के लिए बनाई गई थी। हालांकि हर कलाकृति की एक अलग सी पहचान थी। हर कलाकृति के माध्यम से प्रतिभागी के मन के भाव दिख रहे थे। ऐसे तो कॉलेज विद्यार्थी हर दिन अपने भविष्य के ख्यालों में डूबे रहते हैं। इन ख्यालों में रहते हैं की कब वो दिन आयेगा जिस दिन वो एक बेहतर, प्रोढ़ इंसान बन जायेंगे। परंतु इस इवेंट ने सभी विद्यार्थियों को अपने मन के बच्चे को फिर से जगाने का एक अवसर दिया। इसके चलते इवेंट को काफ़ी सकारात्मक प्रतिकियाँ मिली और इवेंट की अवधि के तीनों घंटे Rotunda खचाखच भरा रहा। इतना ही नही समय सीमा समाप्त होने के बाद भी आधे घंटे तक इच्छुक प्रतिभागी आते रहे। अतः यह इवेंट रचना एवं रंग के एक भावपूर्ण मेल के रूप में उभरा।

नई पीढ़ी का नया संगीत

समय के साथ सब कुछ बदलता है , और संगीत भी इससे अछुता नही हैं। पहले सिर्फ शास्त्रीय संगीत का ही प्रचलन था परन्तु धीरे - धीरे सिनेमा ने संगीत को नयी परिभाषा दी। आज की नयी पीढ़ी का एक मनपसंद संगीत है "E.D.M. Music"। E.D.M. संगीत कम्प्यूटर की मदद से तैयार किया जाता है। ओएसिस के तीसरे दिन बिट्स पिलानी में E.D.M. नाईट का आयोजन हुआ था। इवेंट के प्रवेश में भी हलचल की कमी नही रही और शुरूआत से ही एक घंटे की देर हो गए थी। जब तक यह पता चला तब तक काफी लोग प्रवेश मार्गो पर एकत्रित हो गए थे। फिर क्या ही था? लोगों की बेसब्री उनके हावभाव से पूरी तरह से झलक रही थी। लोग रस्सी के नीचे से और पेड़ों के कोनों से भाग रहे थे। इस कारण धक्का मुक्की पूरी तरह से चालू थी। इतना ही नही, लोगों ने अपने मनोरंजन के लिए गाना, नारे लगाना भी शुरू कर दिया। अंदर घुसने पर भीड़ का स्वागत 'The Tabla Guy' ने किया। EDM संगीत के बैकड्रॉप पर 'The Tabla Guy' के तबले ने खूब माहोल सजाया। सभी इस संगीत पर कूद कूद कर नाच रहे थे और शोर मचाकर कलाकारों को प्यार दिखा रहे थे। E.D.M. के प्रसिद्ध ब्राजील गायक SEVENN इस इवेंट के मुख्य आकर्षण थे। दर्शकों ने SEVENN के संगीत को खूब प्यार दिखाया और उनकी प्रस्तुति के बाद खूब तालियाँ बजकर प्रोत्साहन दिखाया।

इवेंट के आखरी कलाकार 'सीधे मौत'। सीधे मौत अपने प्रदर्शन के दौरान दर्शकों से काफ़ी बातचीत भी करते रहे। वे लोग भीड़ की मात्रा और प्यार देखकर काफ़ी प्रभावित थे और आभार जताते हुए कहा कि यह आज तक का उनका सबसा बड़ा दर्शकगण हैं। भले ही वो तीन दिन से लगातार प्रदर्शन दे रहे हैं पर आज उनकी उर्जा सबसे ज्यादा हैं। उन्होंने 6 साल पहले हुए ओएसिस फेस्ट को याद करते हुए कहा कि किस तरह Rap Wars ने आज उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाया है। उन्होंने अपनी नयी एल्बम 'नायाब' के भी काफ़ी गीत सुनाए। बातचीत में उनके प्रबंधक का भी जिक्र हुआ जिनका आज जन्मदिन हैं। रात्रि बारह बजने के बाद दर्शकों के उनके लिए, सीधे मौत के साथ एक छोटा सा जन्मदीन गीत भी गाया। अंतः समय सीमा समाप्त होने पर न चाहते हुए भी सीधे मौत ने दो आखरी गानों से कार्यक्रम समाप्त किया।

शाम-ए-मलंग

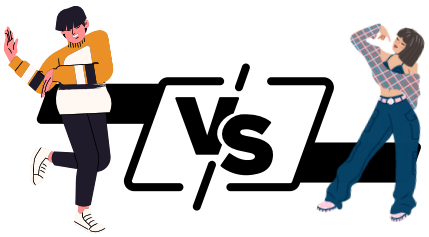

"दिल धक धक करने लगा, ओ मोरा जियरा जलने लगा"। कुछ ऐसा मौहौल था आज SAC में और इसका प्रभाव ऐसा कि एक शर्मीले व्यक्ति को भी बेफिक्र होकर ठुमके लगवा दे। पूरा सैक एम्फी दर्शकों से भरा हुआ और हर तेजस्वी प्रतिभागी को अपना जलवा दिखाने के लिए तीन मिनट का समय दिया जा रहा है। उनके नृत्य से बढ़कर देखने योग्य था उनके लिए हो रहे शोर और चर्चे और यह सब देखकर, स्वर्ण से सजे ओएसिस का चार चाँद लगा दिए। 20-25 टीमों ने भाग लिया और इसमें डीसी की टीम भी थी। डीसी ने बाकियों को ज़ोरदार टक्कर दी। इस प्रतियोगिता का अंतिम चरण उसी रात रोटुंडा में आयोजित हुआ और सारी अपेक्षाओं को पार करते हुए काफी दर्शक पहुँचे। ऐसा लग रहा था मानो सारे नज़रें रोटुंडा पर हो। सारे नृत्य आताम्विश्वास से भरे हुए, एक से बढ़कर एक थे। यह सब तो ठीक है, पर सबसे अनोखी चीज़ थी दर्शकों का उल्लास।

आज कुछ तूफ़ानी करते हैं!

दोस्तों के साथ एडवेंचर करने की इच्छा तो हर कॉलेज स्टूडेंट की होती है लेकिन पिलानी में पहाड़ी पर आखिर कितनी बार जाए? और इस परेशानी को करने हेतु माउंटेनियरिंग एंड इएडवेंचर क्लब ने एडवेंचर जोन का आयोजन करवाया। यहाँ पर माउंटेन क्लाइम्बिंग, टग-ऑफ़-वॉर, हैमर थ्रो से लेकर बुल राइड जैसे कई प्रकार के मज़ेदार एडवेंचर खेलो का आयोजन करवाया गया। खेल में भाग लेने के लिए 50 और 100 रुपये शुल्क के रूप में जमा करने थे। खेलों का आयोजन काफ़ी उत्तम तरीके से करवाया गया था और लोगों में काफी उत्साह का माहौल देखने को मिला। एडवेंचर ज़ोन के एंकर ने काफी अच्छा काम किया। लोग माउंटेन क्लाइंब करने की कोशिश में गिरते हुए, हैमर थ्रो में अपनी पूरी ताकत लगाकर टारगेट मिस करते हुए, और पंचिंग मशीन पर अपना गुस्सा निकालते हुए दिखाई दिए। इन सब के साथ एक पेंटबॉल गेम का भी आयोजन करवाया गया, लोग इसमें अपने दोस्तों के साथ दो अलग-अलग टीम्स में एक दूसरे के खिलाफ जंग करते दिखाई दिए। मैदान-ए-जंग को जिस तरह बनाया गया था वह बहुत आकर्षक था और पूरे खेल का आयोजन बहुत ही शानदार तरीके से किया गया था। इवेंट में जोश से भरे काफ़ी लोगों ने हिस्सा लिया, जिनसे इवेंट में चार चाँद लग गए।

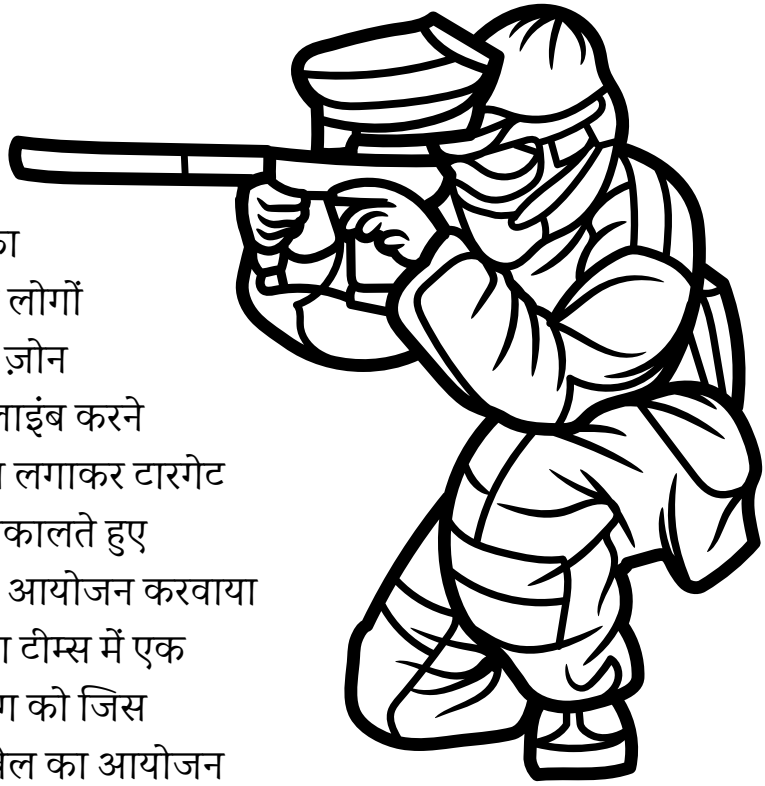

किस्सा कुर्सी का

ओएसिस 2022 के तीसरे दिन खेल, सिनेमा और संगीत के बाद राजनीति ने भी रोमांच बढ़ाने में कोई कसर नही छोड़ी। पब्लिक पॉलिसी क्लब द्वारा आयोजित "Real Politik" खेल ने रोमांच की सीमा लांघ ओएसिस के तीसरे दिन को एक बेहतरीन आकार दिया। यह नि:शुल्क प्रतिस्पर्धा दोपहर 2 बजे से शुरू होकर शाम 6 बजे NAB में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यह मूलतः एक नीलामी आधारित खेल था जिसमें 2-4 सदस्यों की 54 टीमों ने भाग लिया। खेल के मुख्य समन्वयक व नीलामीकर्ता आर्यमन शाह से हुई बातचीत के अनुसार क्लब की उम्मीद से कई अधिक प्रतिभागियों के आने से खेल-कक्ष में जगह की कमी महसूस हुई। किन्तु कुशल प्रबंधन के चलते किसी तरह की अव्यवस्था नही हुई। खेल दो राउंड में खेला गया जिसमें पहला एलिमिनेशन व दूसरा मुख्य था। पहला राउंड 20 मिनट चला जिसमें सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे गए। इस राउंड के पश्चात 20 दलों को अगले राउंड में प्रवेश मिला। मुख्य खेल एक तरह की नीलामी प्रक्रिया थी जिसमें हर दल को अधिकतम 1000 अंको का प्रयोग कर राजनीतिक नेताओं का 8 सदस्यों का समूह बनाना था। हर समूह में न्यूनतम 1 महिला किरदार अनिवार्य व अधिकतम 4 विदेशी किरदार मान्य थे। समूह बनने के पश्चात प्रत्येक सियासी किरदार को अपने राजनीतिक प्रभाव के आधार पर अंक दिए गए। सर्वाधिक अंक वाले दल को विजेता घोषित किया गया व 2000 रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। द्वितीय व तृतीय स्थान पर आने वाले दलों को क्रमशः 1500 व 1000 रुपये दिए गए। खेल के चुनौतीपूर्ण होने का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रक्रिया के दौरान प्रतिद्वंदी दलों के बीच तनातनी की स्थिति देखी गई। किन्तु खिलाड़ियों ने खेल भावना बनाये रखी और खेल को सफलतापूर्वक अंत तक पहुँचाया। खेल की समाप्ति पर समन्वयक ने खेल का संक्षिप्त विवरण दिया। उनके अनुसार क्लब प्रतियोगियों के उत्साह की सराहना करता है। वे भविष्य में ज्यादा बड़ा कक्ष प्राप्त करने का प्रयास करेंगे ताकि अधिक से अधिक दल खेल में सम्मिलित हो सके व खेल का आनंद उठा सके।

सिर्फ अपने लिए नहीं

ओएसिस विभिन्न प्रकार के इवेंट्स और असीम मनोरंजन के लिए मशहूर है। परंतु, फेस्ट के दौरान मनोरंजन के साथ-साथ समाज सेवा के कार्य भी होते हैं। इसी समाज सेवा के एक अंग NSS द्वारा आयोजित 'Shop for a Smile' और 'Eye Donation Camp' हैं। Shop for a Smile में देश के 10 अलग-अलग NGOs के द्वारा बनाये गए सामान बेचे गए। हर सामान ज़रूरतमंद लोगो द्वारा बनाये गए थे। Shop for a Smile के लिए उत्साह बढ़ाने के लिए एक खेल 'Minefield' का भी आयोजन किया गया। खेल के नियम आसान थे। हर बार दो टीम खेलेंगे और हर टीम में न्यूनतम दो खिलाड़ी होंगे। एक खिलाड़ी की आँखों पर पट्टी बंधी रहेगी एवं दूसरा (और टीम के बाकी) खिलाड़ी उस खिलाड़ी को दिशा निर्देश देंगे एवं मनोब बढ़ाने के लिए cheer करेंगे। पहले खिलाड़ी को उसके दोस्तों के दिशा निर्देश द्वारा एक बाधा युक्त मार्ग को पार करना अथवा उसके साथ-साथ चीज़ों को संग्रहित करना था। जो टीम सबसे ज्यादा चीज़ों को संग्रहित करेगी वह जीत जायेगी। खेल का प्रवेश शुल्क 50 रुपये था एवं विजेता टीम को Shop for a Smile में उपयोग करने के लिए 100 रूपये का voucher मिलेगा। इवेंट में NSS को उम्मीद से ज़्यादा प्रतिक्रिया मिली। बिट्स और दूसरे कॉलेजों के विद्यार्थी भी भले ही छोटे रूप में ही पर समाज सेवा में अपना योगदान देने के लिए उत्सुक थे। दूसरा इवेंट 'Eye Donation Camp' था। इसमें लोगों को Eye Donation Pledge के बारे में विस्तार से जानकारी दी और फिर इच्छुक लोगों से Pledge sign करवाया। इस इवेंट में भी उम्मीद से ज़्यादा जनता ने हिस्सा लिया। इसी तरह फेस्ट में लोगों ने मनोरंजन के साथ साथ समाज के लिए भी अपना योगदान दिया।

"फ़ालतू" के मायने

ओएसिस फेस्ट के शुरू होने से एक दिन पहले पूरे बिट्स पिलानी कैम्पस में उत्साह की लहर छा गई। कैम्पस में ठंडी हवाएं चल रही थी। लेकिन इस ठंडी हवा में एक खुशबू थी- आने वाले चार दिनों की मौज भरी छुट्टियों की। शाम को पूरा कैम्पस रौशनी से जगमगा उठा था। कैंपस के मैदानों में खाने के स्टॉल लगाये जा रहे थे। वहीँ श्रीनिवास रामानुजन भवन, यानी S.R. भवन के एक ब्लॉक में टीटी रूम में लड़कों की सभा लगी। ओएसिस में आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रम चर्चा के विषय थे। इतने सारे कार्यक्रम, और केवल चार दिन ! सारे फर्स्ट इयर के छात्र इस असमंजस में थे कि कौनसे खेल में भाग लिया जाए और कौन-कौन सी दुकानों पर पेट पूजा की जाये।

एक तरफ़ टीटी रूम में यह सभा चल रही थी, और दूसरी तरफ़ रूम में अकेला बैठा मनु गुप्ता अपने लैपटॉप पर कुछ पढ़ने की कोशिश कर रहा था। लेकिन उसका पूरा ध्यान पढ़ाई पर केंद्रित नही था। दरअसल मनु का मन भी उस टीटी रूम की सभा में ही था। वह खुद को समझाने की कोशिश करता रहता कि ओएसिस केवल समय बर्बाद करने का बहाना है और पढ़ाई से मन भटकाने का तरीका है। यह नाच-गाना और दूसरे बेतुके खेल तो हमारा ध्यान भटकाते हैं। यह पूरा फेस्ट ही फ़ालतू है।

मनु के बहुत सारे मित्र नही थे, क्योंकि वह देर से आया था। जहाँ अधिकांश लड़के अक्टूबर में बिट्स पिलानी आ कर हॉस्टल में रहने लगे थे , मनु का दाखिला नवंबर में हो पाया था। उसने तो सिलेक्शन की उम्मीद छोड़ ही दी थी जब उसे बिट्स में दाखिले की खबर मिली। मनु का बस एक ही अच्छा दोस्त था- पुनीत , जो मनु का रूमी था। मनु के दिल में यह महाभारत चल ही रही थी कि पुनीत आकर मनु को बाहर बुलाने लगा। मनु ने पुनीत को ओएसिस के बारे में अपने विचार बताए। पुनीत जानता था कि ओएसिस नही, मनु के बहाने ही बेतुके हैं। उसने मनु की एक न सुनी और खींच कर टीटी रूम ले आया। सभा में मनु ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा तो नही लिया , लेकिन वह एक कोने में खड़ा होकर सबकी बात सुन रहा था। सभा का निष्कर्ष यह निकला की पहले दिन सभी ब्लॉक वासियों को इंडी नाईट शो में तो जाना ही चाहिए, बाकी जहाँ दिल करे, चले जाएँगे।

अगली सुबह ब्लॉक के सारे लड़के खूब जोश के साथ उठ गए और अच्छे कपड़े पहन कर तैयार हो गए। मनु भी जल्दी उठ कर तैयार हो गया, लेकिन उसे उत्साह से ज़्यादा डर महसूस हो रहा था। अपने इस डर को छुपाता हुआ वह पुनीत और अपने विंग के कुछ और लड़कों के साथ निकल पड़ा। सबसे पहले वह NSS, यानी राष्ट्रिय सेवा योजना के स्टॉल्स में गए। वहाँ पर कई चीज़ों की बिक्री हो रही थी, जैसे स्पीकर, खिलौने, कॉपियाँ, इत्यादि।

पूछने पर पता चला कि यह सारी वस्तुएं कई सारे NGO से खरीदी गयी हैं। NGO एक ऐसा संस्थान होता है जो नि:स्वार्थ भाव से, लोगों के कल्याण हेतु काम करता है। यह देखकर मनु के ह्रदय में समाज सेवा की भावना जागी और उसने भी इस भले काम में अपना छोटा सा योगदान दिया। मनु ने WWF संस्थान का एक ब्रोश पसंद कर खरीद लिया, और उसे लगाकर घूमने लगा। WWF दुनिया भर में जानवरों की सुरक्षा के लिए कार्य करती है। उसके बाद मनु, पुनीत और उनके समूह ने साथ में कुछ खेल खेले जैसे MINEFIELD और HEADS UP। मनु को यह खेलने में बहुत आनंद आया। प्रवेश परीक्षाओं के चक्कर में उसने कई महीनों से खेलना छोड़ ही दिया था। इन खेलों के द्वारा वह नए दोस्त भी बना पाया जैसे अंश, शिवाय, आदित और रूद्र। अब यह लड़के केवल उसके विंगी ही नही, बल्कि उसके मित्र बन चुके थे। कुछ ही घंटों में मनु की सारी झिझक खत्म हो गई थी। अब उसका डर गायब हो गया था और वह आगे के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए उत्सुक था। शाम को मनु ने अपने मित्रों के साथ पहली बार FORMULA 1 कार रेस देखी।

रात को वह उस इवेंट में गए जिसका उन्हें बेसब्री से इन्तेज़ार था- इंडी नाईट। शो शुरु होने से पहले मनु असहज महसूस कर रहा था लेकिन शो शुरु होते ही उसे अपने अंदर एक नया “मनु गुप्ता” देखने को मिला। संगीत ने मनु को एक नया रूप दिया। सभी लड़कों ने गीतों पर DANCE किया और इवेंट का खूब आनंद उठाया। स्टॉल पर पिज़्ज़ा खाने के बाद सभी लड़के अपने हॉस्टल चले गए।

रात को मनु अपने बिस्तर पर अपनी आँखे बंद कर ख्यालों में डूबा हुआ था। इस घटना का उसके आत्मविश्वास पर काफ़ी सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उसे खेल, नृत्य और संगीत का जीवन में महत्व समझ आया। उसे समझ आया कि वह दूसरों से अलग नही है, बल्कि उनके ही जैसा है। ओएसिस के एक ही दिन ने मानो उसपर कोई जादू कर दिया हो। सब इस “फ़ालतू “ से फेस्ट के कारण।

ताल ठोक के...

ओएसिस हर बीतते दिन के साथ, नए आयाम छू रहा है। हर ओर रोमांच, मनोरंजन व आनंद चरम की ओर बढ़ रहा है। जिधर देखो उधर ही उत्साह व उमंग की लहर है। पूरा बिट्स 50वें ओएसिस के सुनहरे रंग में रंग चुका है। ओएसिस के तीसरे दिन की सुनहरी दोपहर रागमल्लिका द्वारा आयोजित Classical Prof Show के नाम रही जिसका पंजीकरण शुल्क 150 रुपये था। यह कार्यक्रम हालांकि समय से करीबन एक घंटा देरी से प्रारम्भ हुआ। Main Audi में संपन्न हुए इस संगीतमय आयोजन में परंपरागत वाद्य यंत्रों व मधुर ध्वनि के अद्भुत संगम ने समां बाँध दिया। मुख्य संगीतकार की भूमिका विद्वान रामाकृष्णन मूर्ति निभा रहे थे। जिनके साथ विदुषी चारुमति रघुरामन ने जहां वायलिन बजा कर दर्शकों का दिल जीता, तो वही विद्वान एन.सी. भारद्वाज व विद्वान चंद्रशेखर ने क्रमशः मृदंगम व घटम बजा संगीतप्रेमी दर्शक दीर्घा पर अपनी छाप छोड़ी। तकरीबन 3 घंटे तक चलने वाले इस कार्यक्रम की खासियत रही आधुनिकता की ओर जा रही जनता को परंपरागत शैली से अवगत कराना। जैसे-जैसे वे प्रख्यात संगीतज्ञ अपने वाद्य यंत्रों पर तार छेड़ रहे थे मानो स्वयं देवी सरस्वती अपनी वीणा से मानव को मंत्रमुग्ध कर रही हो। इस अद्भुत कार्यक्रम के संदर्भ में ओएसिस हिंदी प्रेस का मानना है कि इस तरह के कार्यक्रम को बढ़ावा मिलना आवश्यक है ताकि आधुनिकता के ज्वर में आकर वर्तमान पीढ़ी अपनी पारंपरिक शैली को न भूले और कला की समझ सभी आयु वर्गों में अपने पैर पसारती रहे।

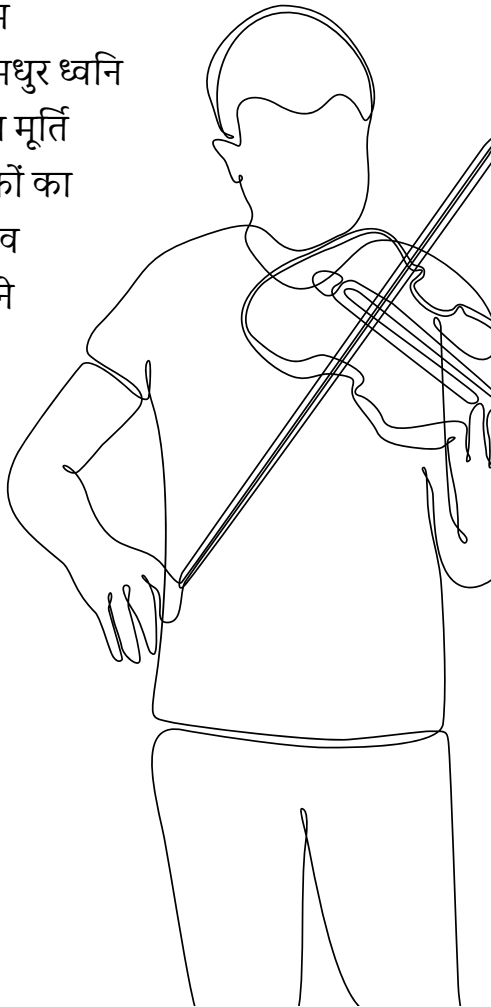

क्रायमैन से बातचीत

हिंदी प्रेस क्लब ने रैपवॉर्स के मुख्य निर्णायककर्ता वोल्फ़ क्रायमैन का साक्षात्कार किया। इस वार्तालाप के कुछ मुख्य अंश प्रस्तुत हैं-

प्रश्न) आपका बिट्स पिलानी में अभी तक का अनुभव कैसा रहा?
बिट्स में काफ़ी मज़ा आया। यहां काफ़ी अच्छा लग रहा है। मैं पहली बार राजस्थान आया हूं। पिलानी काफ़ी शांत जगह लगी।

प्रश्न) यहां की रैपवॉर में जज की भूमिका कैसी रही?
मैंने रैप में जज की जिम्मेदारी पहली बार निभाई है। मैंने दिल्ली में काफ़ी रैप देखे हैं, लेकिन जज करने का भी अलग अनुभव रहा।

प्रश्न) आपने रैप को किन मायदंडों के आधार पर जज किया?
परफॉर्मेंस स्टाइल, कंटेंट, डिलिवरी और फ्लो कुछ पहलू थे जिसपर हमने ध्यान दिया था।

प्रश्न) बिट्स के रैपवॉर के बारे में क्या कहना चाहेंगे?
मुझे यह एक सुखद अनुभव था। दोनो फाइनलिस्ट उत्कृष्ट थे। एक विजेता चुनना काफ़ी मुश्किल था।

प्रश्न) अंत में आप भावी रैपर्स और बिट्सियनस को कोई संदेश देना चाहेंगे?
मैं तो यही कहूंगा की ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को सुने, जो मस्त लगता है वो करें, और अपने मन की सुनें। बिट्सियन्स को मैं यही कहना चाहूंगा की LITE कल्चर को कभी नही भूलना चाहिए। कॉलेज से निकलने के बाद यही चीज़ें याद आयेंगी। हमेशा अपना ओरिजनल करो। जबतक यह नही होता तब तक सब प्रैक्टिस ही है। तुम बिट्स तक आए हो तो लाइफ में कुछ तो बहुत बड़ा करोगे ही। अभी जैसी दोस्ती बाद में कभी नही मिलेगी। कॉलेज अपने पर्सनेलिटी को निखारने के लिए सबसे अच्छी जगह है।

प्रश्न) हर्षित वाधवानी (वुल्फ क्राई मैन) बिट्स पिलानी के पूर्व छात्र भी थे, आपके समय के ओएसिस और अभी में आपको क्या अंतर दिख रहा है?
मैं यहाँ दस साल बाद आया हूं। काफ़ी चीजे पहले से काफ़ी बदल गई हैं लेकिन कुछ चीज़ें पहले जैसी ही है। पहले जब रोटुंडा नही था तो FD 2 के QT में ज़्यादातर इवेंट्स होते थे। अगर तुम कुछ अलग कर रहे हो तो करते रहो, अंत में अवश्य कुछ अच्छा होगा।

कर्मफल

अपने कुकर्मो का फल तुम्हें नर्क में भोगना पड़ेगा' गरुड़ पुराण से प्रेरित ये शब्द हम सभी ने कभी न कभी अपने परिवार के वृद्धजनो से सुने होंगे परन्तु आधुनिक संसाधनों व वैज्ञानिक व्याख्या से घिरे इस समय में ये युवा पीढ़ी इन शब्दों से थोड़ा कम ही राब्ता रखती है साथ ही इस 21वी सदी में जहां महिलायें रक्षा क्षेत्र से लेकर खेलों तक हर जगह बखूबी अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर रही हैं वहीँ कुछ पुरुष, महिलाओं को बस अपनी कामवासना को मिटाने का एक पात्र मानते हैं। और इसी पर नज़र गयी हिंदी ड्रामा क्लब के लेखकों की और इसी थीम के इर्द-गिर्द एक नाटक लिखा गया जिसका मंचन ओएसिस के तीसरे दिन पर मुख्यसभागार में सवेरे दस बजकर चालीस मिनट पर हुआ।

नाटक की शुरुआत हुई सिद्दार्थ नामक युवक और यमराज के बीच वार्तालाप से जिसमे यमराज सिद्दार्थ को उसके कर्मो का स्मरण करवा रहे थे। इसी क्रम में यमराज ने तीन युवतियों को बुलाया जिनमें से 1 को सिद्दार्थ ने पहचानने से इनकार कर दिया। बाद में पता चला की ये वो ही लड़की है जिसको सिद्दार्थ ने बाकी लड़कियों की ही तरह अपनी कामुकता की प्यास को बुझाने के लिए कुछ पैसे दिए थे और बाद में शराब के नशे में धुत होकर हत्या कर दी थी। इसी बीच यमराज ने उस इकलौती लड़की का ज़िक्र किया जिसको सिद्दार्थ एक वस्तु नही बल्कि अपनी प्रेमिका के रूप में देखता है। तुरंत बाद यमराज ये भी खुलासा करते हैं की सिद्दार्थ का असली नाम सिद्दार्थ नही बल्कि विक्रम है। और विक्रम, सिद्दार्थ के लिए काम करता था परन्तु सिद्दार्थ , विक्रम के साथ जानवरों से भी बदतर सलूक करता था। और ऐसे ही एक दिन जब सिद्दार्थ, विक्रम के साथ बदतमीज़ी करने की कोशिश करता है तो बात हाथापाई तक पहुँच जाती है और विक्रम के हाथों सिद्धार्थ की हत्या हो जाती है। मौके का फ़ायदा उठाते हुए विक्रम, सिद्दार्थ की पहचान को हमेशा के लिए अपना लेता है। अंत में यमराज उस वृत्तांत को भी सुनाते हैं जिसमें विक्रम अपने पिता की हत्या का बदला लेने के लिए अपनी माँ व उसके प्रेमी को आग के हवाले कर देता है, और यमराज विक्रम को अपनी राह बदलने का एक और मौका देते हैं और फिर से उसी मोड़ पर ला खड़ा करते हैं जहां से उसके पतन की शुरुआत हुई थी पर आदत से मजबूर और आक्रोषित विक्रम ने फिर से उसी मार्ग को चुना। यमराज ने विक्रम को स्वेच्छा से किये छल और विश्वासघात के तहत नर्क में उनका फल भोगने का दंड दिया।

लेखकों की कलात्मक सृजनता ने दर्शकों को काफ़ी प्रभावित किया। तालियों की गड़गड़ाहट ने सभागार को सैदेव गुंजायमान रखा।HDC से बात करने पर पता चला कि मुख्य किरदार निभाने वाले कलाकार इस कदर अपने किरदार में डूबे थे कि उन्होंने 2 दिन पहले से ही अपने मित्रगणों एवं परिवार से दूरी बनाना शुरू कर दिया। नाटक के मंचन के दौरान दर्शक इस कदर डूबे की अंत तक लगभग सभी की आँखों में आंसू थे। दर्शक ये बात पूर्णतया समझ चुके थे की जिस तरह विक्रम को उसके कर्मो की सज़ा मिली उसी तरह उनके कर्म भी उन्हें एक ना एक दिन यमराज के दरवाज़े पर ला खड़ा करेंगे और उन्हें अपने कर्मो के अनुरूपसज़ा मिलेगी। दर्शकों का मानना है के ये नाटक निश्चित तौर पर समाज में सकारात्मक सुधार लाएगा।

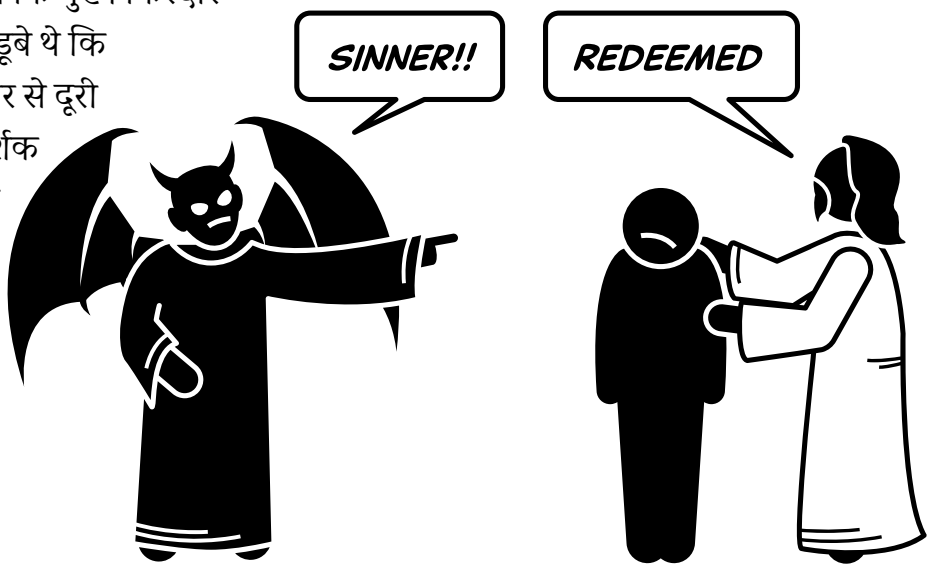

BharatX
edvanza
Srishti Creating Bestsellers
Irusu
SayF
tikkl
tortoise
Ksheer
itspl Broadband
Gustora
sparx GO FOR IT
91 NINETY ONE
Coca-Cola
BOMBAY SHAVING COMPANY
TATA MOTORS Connecting Aspirations

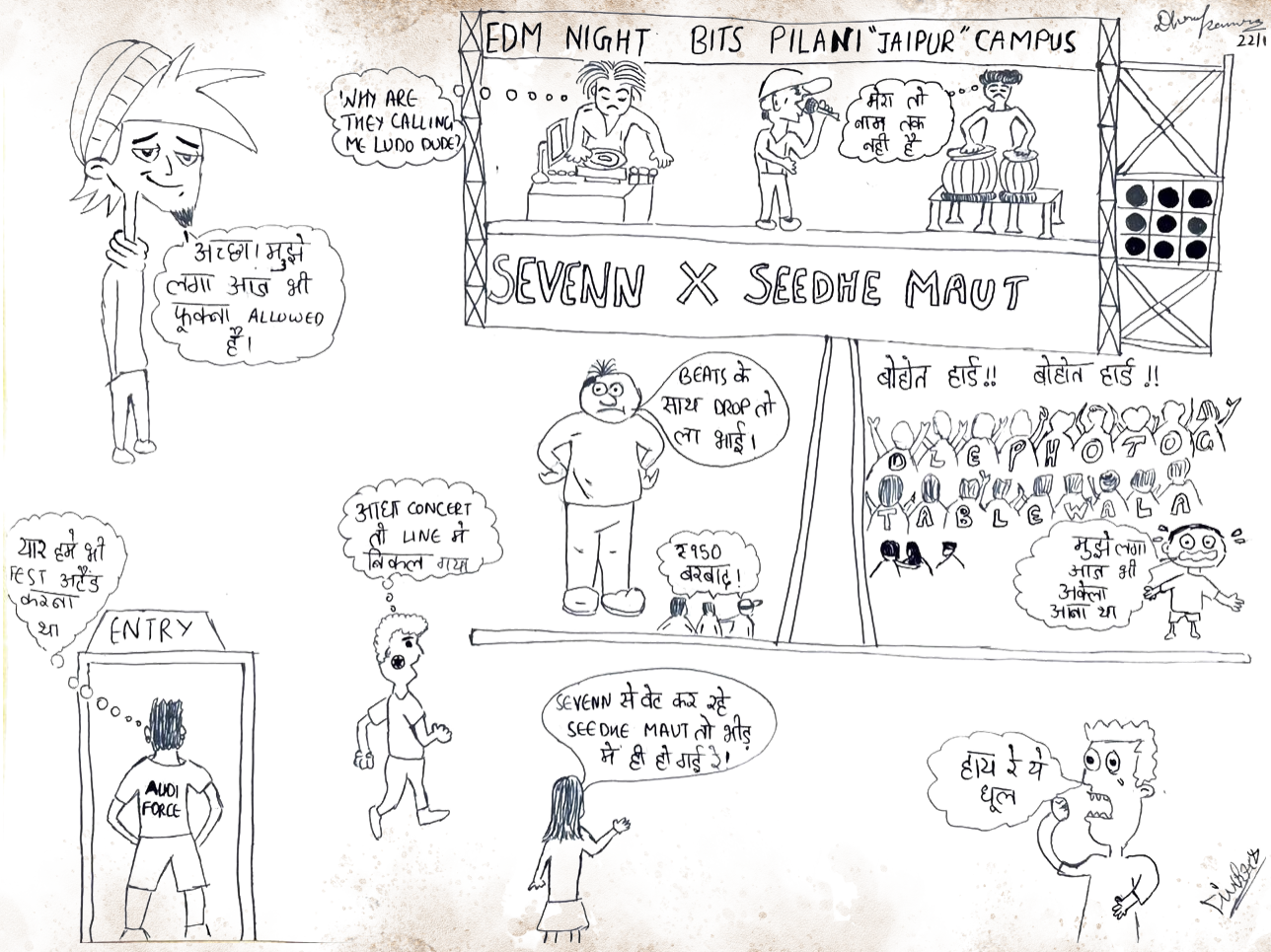

ओएसिस हिन्दी प्रेस

हार्दिक, संस्कार, लाम्बा, शाल्मली, परीश्री

ऋत्विक, आर्यमन, सर्वेश, जैनम, देव, आकाश, आरुषी, आर्ची, निशिका, भव्य, हिमांशी, आदित्य

अमृत, मल्लिका, सर्वाक्ष, वैष्णवी, विदित, पुलकित, कामरा, अनुज, अवि, सार्थ, अक्षय

हर्ष, रिया, दिवाकर, अभिन्नशीश, हर्षवर्धन, कौस्तुभ, नमः, कविश, वीरेंदर, भाविनी, राहुल